भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान
ICAR-Indian Institute of Soybean Research
खंडवा रोड, इन्दौर 452001
Khandwa Road, Indore-452001

फ़ाइल् क्रमांक **F.No. :** टेक **10-6/2021** दिनांक **Date: 19.07.2021**

कृषकों से निवेदन है कि कृषि कार्य के संयोजन में स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार या स्थानीय प्रशासन द्वारा जारी दिशानिर्देशों का पालन करें .

सोयाबीन कृषकों के लिए उपयोगी सलाह @Advisory for Soybean Farmers
(19-25 जुलाई / 19-25 July 2021)

अ.	**सूखे की स्थिति में प्रबंधन के उपाय**	
1	कई क्षेत्रो में बोवनी के बाद अवर्षा की स्थिति में सोयाबीन की फसल में पीलापन आने के समाचार मिले हैं जिसमे पौधे की उपरी पत्तियां पीली पड़ती हैं जबकि पत्ती की शिराए हरी होती हैं. ऐसी स्थिति में सलाह हैं की अपने खेत में नमी बनाये रखने के सभी तरीके (भूसे से पलवार, डोरा-कुल्पा/निराई गुड़ाई, दरारे पड़ने से पहले सुविधानुसार फसल में सिंचाई आदि) अपनाये. यह भी जानकारी पाए कि ऐसा फसल में लौह तत्व की अस्थाई कमी से होता है. पर्याप्त वर्षा होने पर सोयाबीन की फसल का पीलापन अपने आप समाप्त हो जायेगा.	
2	सूखे की स्थिति में फसल के प्रबंधन हेतु कृषकगण सोयाबीन फसल के लिए अनुशंसित एन्टीट्रांस्पिरेन्ट जैसे पोटेशियम नाइट्रेट (1%) **या** मेग्नेशियम कार्बोनेट अथवा ग्लिसरॉल (5%) का छिड़काव कर सकते हैं.	
ब.	**खरपतवार प्रबंधन के उपाय**	
3	सोयाबीन के खेत को प्रारंभिक 45 दिन तक खरपतवार मुक्त रखने हेतु वरीयता अनुसार खरपतवार नियंत्रण की विभिन्न अनुशंसित विधियों (हाथ से निंदाई/डोरा/कुलपा/खड़ी फसल में उपयोगी रासायनिक खरपतवारनाशक) में से किसी एक का प्रयोग करें. सोयाबीन की खड़ी फसल में उपयुक्त अनुशंसित खरपतवारनाशकों की सूचि के लिए तालिका 1 देखे.	
4	जिन कृषकों ने बोवनी पूर्व या बोवनी के तुरंत बाद उपयोगी खरपतवारनाशक का छिडकाव किया है, वे 20-30 दिन की फसल होने पर डोरा/कुलपा चलायें.	
5	खरपतवार नाशक एवं कीटनाशक के अलग-अलग छिड़काव में होने वाले व्यय को कम करने एवं एक साथ उपयोग करने हेतु उनकी संगतता बाबत किये गए अनुसन्धान परीक्षणों के आधार पर सोयाबीन में निम्न कीटनाशकों एवं खरपतवार नाशकों को मिलाकर छिड़काव किया जा सकता है: क्लोरइंट्रानिलिप्रोल 18.5 एस.सी. (150 मिली./हे) या इन्डोक्साकार्ब 15.8 ई.सी. (333 मिली/हे) या क्विनाल्फोस 25 ई.सी. (1500 मिली/हे) के साथ अनुशंसित खरपतवारनाशक जैसे इमज़ेथापायर 10 एस.एल. (1 ली/हे) या क्विज़लोफोप इथाइल 5 ई.सी. (1 ली/हे).	

तालिका 1: सोयाबीन के लिए अनुशंसित खरपतवारनाशकों की सूचि

क्रं.	खरपतवारनाशक का प्रकार	रासायनिक नाम	मात्रा/हेक्टे.
अ	बौवनी के 10-12 दिन बाद (पीओई)	क्लोरीम्यूरान इथाईल 25 डब्ल्यू.पी.	36 ग्राम
		बेन्टाझोन 48 एस.एल.	2 ली.
ब.	बौवनी के 15-20 दिन बाद (पीओई)	इमेझेथापायर 10 एस.एल.	1.00 ली.
		क्विजालोफाप इथाईल 5 ई.सी.	1.00 ली.
		क्विजालोफाप-पी-इथाईल 10 ई.सी.	375-450 मि.ली.
		फेनाक्सीफाप-पी- इथाईल 9 ई.सी.	1.00 ली.
		क्विजालोफाप-पी-टेफ्युरिल 4.41 ई.सी.	1.00 ली.
		फ्ल्यूआजीफॉप-पी-ब्युटाईल 13.4 ई.सी.	1-2 ली.
		हेलाक्सिफॉप आर मिथाईल 10.5 ई.सी.	1-1.25 ली.
		इमेझेथापायर 70% डब्ल्यू.जी+सर्फेक्टेन्ट	100 ग्रा
		प्रोपाक्विजाफॉप 10 ई.सी.	0.5-0.75 ली.
		फ्लूथियासेट मिथाईल 10.3 ई.सी.	125 मि.ली.
स.	पूर्वमिश्रित खरपतवारनाशक	फ्लूआजिआफॉप-पी-ब्युटाईल+फोमेसाफेन	1 ली.
		इमाझेथापायर+इमेजामॉक्स	100 ग्रा.
		प्रोपाक्विजाफॉप+इमाझेथापायर	2.0 ली.
		सोडियम एसीफ्लोरफेन+क्लोडिनाफाप प्रोपारगील	1 ली.
		फोमेसाफेन+ क्विजालोफाप इथाईल	1.5 ली.

स.	कीट नियंत्रण के लिए सुरक्षात्मक उपाय	
6	जैविक सोयाबीन उत्पादन में रुची रखने वाले कृषक गण पत्ती खाने वाली इल्लियों (सेमीलूपर, तम्बाखू की इल्ली) की छोटी अवस्था की रोकथाम हेतु *बेसिलस थुरिन्जिएन्सिस* अथवा *ब्युवेरिया बेसिआना* या नोमुरिया रिलेयी (1.0 ली./हेक्टे.) का प्रयोग कर सकते हैं. यह भी सलाह हैं कि प्रकाश प्रपंच का भी उपयोग कर सकते हैं.	
7	सोयाबीन की फसल में तम्बाखू की इल्ली एवं चने की इल्ली के प्रबंधन के लिए बाजार में उपलब्ध कीट-विशेष फिरोमोन ट्रैप्स एवं वायरस आधारित एन.पी.वी. (250 एल.ई./हेक्टे.) का उपयोग करें.	
8	यह भी सलाह है कि सोयाबीन की फसल में पक्षियों की बैठने हेतु "T" आकार के बर्ड-पर्चेस लगाये . इससे कीट-भक्षी पक्षियों द्वारा भी इल्लियों की संख्या कम करने में सहायता मिलती है.	
9	यह भी सलाह हैं कि "सफ़ेद मक्खी" या एफिड के नियंत्रण हेतु कृषकगणअपने खेत में विभिन्न स्थानों पर पीला स्टिकी ट्रैप लगाएं.	

द .	कीट नियंत्रण के लिए सुरक्षात्मक उपाय	
10	जहाँ पर बोवनी के तुरंत बाद उपयोगी खरपतवारनाशकों का प्रयोग नहीं किया गया हैं, कृषकों को सलाह हैं कि पर्णभक्षी इल्लियों से सुरक्षा हेतु फूल आने से 4-5 दिन पहले अपनी फसल पर क्लोरइंट्रानिलिप्रोल 18.5 एस.सी. (150 मिली./हे) का छिड़काव करें. इससे अगले 25-30 दिनों तक इल्लियों से सुरक्षा मिलेगी. इसके छिडकाव से चक्र भृंग के नियंत्रण में भी सहायता मिलेगी.	
11	महाराष्ट्र के कुछ जिलों में तना मक्खी का प्रकोप होने के समाचार प्राप्त हुए हैं. अतः सलाह हैं की इसके नियंत्रण हेतु पूर्वमिश्रित थायमिथोक्सम़ + लैम्बडा सायहेलोथ्रिन (125 मिली/.है.) या बीटासायफ्लुथ्रिन + इमिडाक्लोप्रिड) 350 मिली /.है(. का छिडकाव करें.	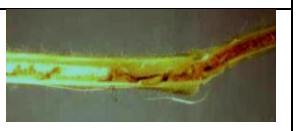
12	कुछेक क्षेत्रों में चक्र भृंग का प्रकोप प्रारंभ होने के समाचार प्राप्त हुए हैं. अतः सलाह है कि इसके फैलाव की रोकथाम हेतु प्रारंभिक अवस्था में ही पौधे के ग्रसित भाग को तोड़कर नष्ट करें तथा अनुशंसित कीटनाशक जैसे थायक्लोप्रिड 21.7 एस.सी. (750 ली/.है.) या प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी (1250 मि.ली/.है) या पूर्वमिश्रितकीटनाशक बीटासायफ्लुथ्रिन + इमिडाक्लोप्रिड (350 मिली /.है.) या पूर्वमिश्रितकीटनाशक थायमिथोक्सम़ + लैम्बडा सायहेलोथ्रिन (125 मिली/.है) या इमामेक्टीन बेन्जोएट 425 मिली/हे. का 500 लीटर पानी के साथ 1 हेक्टेयर में छिड़काव करें।	
13	पूर्वमिश्रित कीटनाशक नोवाल्युरौन + इन्डोक्साकार्ब का 850 मिली/हे की दर से छिडकाव से तम्बाकू की इल्ली एवं चने की इल्ली के प्रबंधन में सहायता मिलती हैं.	

इ.	रोग प्रबंधन के लिए सुरक्षात्मक उपाय	
14	महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में सोयाबीन की फसल पर सोयाबीन मोज़ेक वायरस व पीला मोज़ेक वायरस के लक्षण देखे गए हैं. अतः सलाह हैं कि तत्काल रोगग्रस्त पौधों को खेत से उखाड़कर निष्कासित करें तथा इन रोगों को फ़ैलाने वाले वाहक जैसे एफिड एवं सफ़ेद मक्खी की रोकथाम हेतु पूर्वमिश्रित कीटनाशक थायोमिथोक्सम + लैम्ब्डा सायहेलोथ्रिन (125 मिली/हे) या बीटासायफ्लुथ्रिन+इमिड़ाक्लोप्रिड (350 मिली./हे) का छिडकाव करें. इनके छिडकाव से तना मक्खी का भी नियंत्रण किया जा सकता हैं.	

****